Gmail

DS . <ds@aiims.edu>

Fwd: अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस: उपराष्ट्रपति महोदय का संबोधन।

1 message

DDA . <dda@aiims.edu> Thu, Mar 4, 2021 at 5:08 PM
To: ds@aiims.edu, Srfa <srfa.aiims@gmail.com>

---------- Forwarded message ---------
From: **hindi section 1** <sectionhindi@gmail.com>
Date: Thu, Mar 4, 2021 at 4:12 PM
Subject: अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस: उपराष्ट्रपति महोदय का संबोधन।
To: <cmo.nfsg@aiipmr.gov.in>, JIPMER college <hindicell_jipmer@yahoo.com>, PGIMER CHANDIGARH <pgimer-chd@nic.in>, <dda@aiims.edu>, aiims hindisection <aiimshindisection@gmail.com>, AIIMS Delhi <director.aiims@gmail.com>, <principalrakcon@yahoo.com>, <principal@rakcon.com>, <info@nihfw.org>, <director@nihfw.org>, <director.nihfw@nic.in>, <dd_a@nihfw.org>, Arvind Kumar <arvindk1960@gmail.com>, Keshraj Meena <meenakeshraj@gmail.com>, <icmrhqds@sansad.nic.in>, <headquarters@icmr.org.in>, Secretary DHR <secy-dg@icmr.gov.in>, <jainnc.hq@icmr.gov.in>, <rpkhandelwal@lifecarehll.com>, <arunsinghal@lifecarehll.com>, <vinayk@lifecarehll.com>, <director@jipmer.edu.in>, <dean@jipmer.edu.in>, <aiish_dir@yahoo.com>, <director@aiishmysore.in>, <dirstaff@nimhans.ac.in>, Medical Superintendent NIMHANS <ms@nimhans.ac.in>, Publication Dept NIMHANS <publicn@nimhans.ac.in>, Pasteur Coonoor <piicnr@gmail.com>, Purchase PIIC <directorpiic@dataone.in>, <dirlrsi@bol.net.in>, GV RAJU <sa-nitrd@nic.in>, <r.sarin@nitrd.nic.in>, <cncionline@vsnl.net>, <cncist@giascl01.vsnl.net.in>, <cncinst@vsnl.com>, Jyoti Kumari <jyoti.kri92@gmail.com>, <info.neigrihms@nic.in>, DAVID TEIRYLANG UMDOR <davidumdor@gmail.com>, <neigri@sancharnet.in>, Store & Procurement NEIGRIHMS <storeneigrihms@gmail.com>, <neigri_shg@dataone.in>, <purchasepiic@gmail.com>, <as@indianursingcoucil.org>, <secy.inc@gov.in>, KS BHARTI <js.inc@gov.in>, <pci@ndb.vsnl.net.in>, <secy-dci@nic.in>, <secy_mci@nic.in>, Hindicell <hindicell@mciindia.org>, MEDICAL COUNCIL OF INDIA <mci@bol.net.in>, <admin@mciindia.org>, nams aca <nams_aca@yahoo.com>, Neha Gupta <neha.twinkle22@gmail.com>, <mail@natboard.edu.in>, <sukhvarsha@natboard.edu.in>, <director@iips.net>, <fram@iips.net>, <ksjames@iips.net>, <registraroffice@iips.net>, <aradmin@iips.net>, NIB <info@nib.gov.in>, <rchhabra@nib.gov.in>, <pcpmahapatra@nib.gov.in>, <pkmohapatra@nib.gov.in>, <fwtrc@indiatimes.com>, Dr Deepak Raut <director.fwtrc@nic.in>, <dirdhs@nic.in>, <laxmi.garg@nic.in>, <admnofficerdhs@gmail.com>, <jagdish.prasad55@nic.in>, Rhtc Najafgarh <rhtcnajafgarh@gmail.com>, DDA AIIMS Raipur <dda@aiimsraipur.edu.in>, Senior Administrative Officer <admin@aiimsraipur.edu.in>, Director AIIMS Raipur <director@aiimsraipur.edu.in>, <directoroffice@aiimsraipur.edu.in>, Dr. Ajay Dani <ms@aiimsraipur.edu.in>, <kamal.swaroop@nic.in>, <adhq.cghs@yahoo.com>, <asdgcghs-mohfw@nic.in>, Devendra Kumar Assistant,Cabinet Sectt <devendra.kumar57@nic.in>, Rakesh Kumar <rakeshkumar.aoaiims@gmail.com>, <director@aiimsrishikesh.edu.in>, नीरा तिवाड़ी <shoneeratiwari@gmail.com>, <director@aiimsbhubaneswar.edu.in>, Dr Mukunda Chandra Sahoo <mcsahoo1@gmail.com>, <director@aiimsjodhpur.edu.in>, <dda@aiimsjodhpur.edu.in>, <aoadmin@aiimsjodhpur.edu.in>, <admin@aiimspatna.org>, <director@aiimspatna.org>, Director AIIMS, Bhopal <director@aiimsbhopal.edu.in>, Santosh Sohgaura <dydir@aiimsbhopal.edu.in>, <admin@aiimsbhopal.edu.in>, Medical Superintendent <tamaria.ms@aiimsbhopal.edu.in>, <drrlko@yahoo.com>, <menrhm@gmail.com>

--
Office of Dy. Director (Admn.)
A.I.I.M.S., New Delhi
011-26594804

sambodhn.pdf
2297K

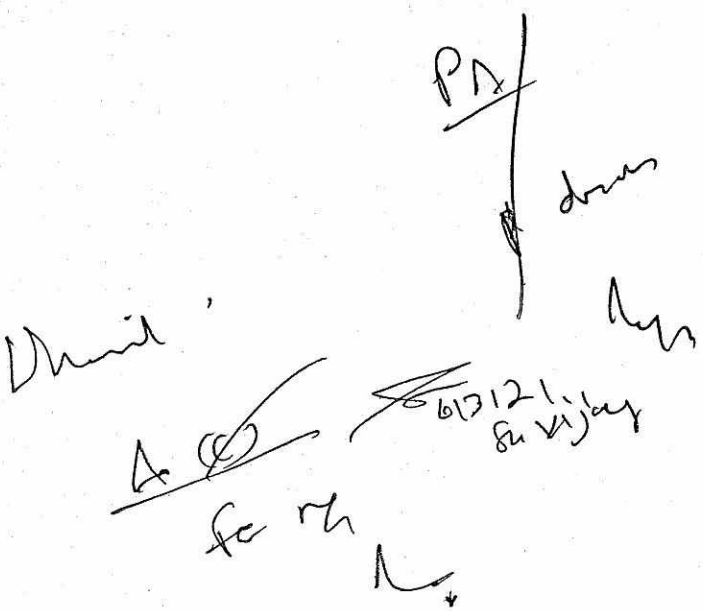

भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

दिनांक: 24 फरवरी, 2021
3 मार्च
निर्माण भवन, नई दिल्ली

विषय: अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस: उपराष्ट्रपति महोदय का संबोधन।

भाषा मानव जीवन के विकास की आधारशिला रही है। भारत जैसे विशाल सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं वाले देश में भारत की भाषाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। समग्र और एकीकृत राष्ट्रीय विकास में भारत की सभी भाषाओं और मातृभाषाओं की अपनी अनोखी भूमिका रही है। भाषा समग्र और समाज की इसी सांस्कृतिक प्रक्रिया को रेखांकित करते हुए भारत के माननीय उपराष्ट्रपति माननीय श्री एम. वैंकैया नायडू ने एक पठनीय और विचारोत्तेजक लेख लिखा है।

उक्त लेख मूलरूप में इस पत्र के साथ परिचालित किया जा रहा है ताकि सभी अधिकारी और सुधीजन इस पत्र को पढ़ें तथा इसमें निहित भावना से परिचित होते हुए इन सुझावों का पालन कर सकें।

भवदीय,
(आलोक सक्सेना)
संयुक्त सचिव, तथा प्रभारी (राजभाषा)

प्रति:- 1. सभी अधिकारी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।
2. सभी अधीनस्थ कार्यालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय।

प्रतिलिपि :- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री के अतिरिक्त निजी सचिव को उनके दिनांक:- 15 फरवरी,2021 के पत्र सं. एफटीएस सं.2077595/2021/डीआईपी/एचएफएम के संदर्भ में सूचनार्थ।

भारत के उपराष्ट्रपति

VICE-PRESIDENT OF INDIA

16 फरवरी, 2021

माननीय डॉ. हर्षवर्धन जी,

नमस्ते,

मैं,आज यह पत्र, हमारी भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन हेतु,आपका महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त करने की अपेक्षा से लिख रहा हूं।

जब मैं तेज़ी से बदलती सामाजिक आर्थिक स्थितियों के बारे में सोचता हूं, व्यक्ति के शैक्षणिक उत्कर्ष तथा राष्ट्र की प्रगति में भाषा और साहित्य के महत्व पर विचार करता हूं तो मेरा यह विश्वास दृढ़ होता जाता है कि भारतीय भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए, हमें और अधिक साझा प्रयास करने की जरूरत है।अपनी भाषाओं को बचाने और समृद्ध करने के लिए रोजमर्रा के जीवन में उनका नियमित उपयोग करने की आवश्यकता है।

हमारे देश में लगभग 19500 भाषाएं या बोलियां बोली जाती हैं, इनमें से 200 पर तो लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने भी चिंता जाहिर की है कि विश्व में हर दो हफ्ते में एक भाषा लुप्त होती जा रही है। इसी क्रम में संयुक्त राष्ट्र ने हर वर्ष 21 फरवरी को 'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 'के रूप में मनाने का निर्णय किया है।

भारत में हमारे लिए अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विशेष महत्व है। सांस्कृतिक तथा भाषाई विविधता हमारी सनातन भारतीय सभ्यता का आधार रही है। हमारे मूल्य, हमारा दर्शन, आदर्श और आकांक्षाएं, जीवन और साहित्य, सभी हमारी मातृभाषाओं में ही अभिव्यक्ति पाते हैं। हमारी विविध भाषायें और बोलियां, हमारी उस पारंपरिक स्थानीय ज्ञान परम्परा की वाहक रही हैं, जो इन भाषाओं के साथ ही स्वयं भी लुप्त होने के कगार पर खड़ी है। ऐसा उस मानसिकता के कारण है जो अपनी ही मातृभाषा को हीन भावना से देखती है और अंग्रेजी में प्रवीणता की सतही बौद्धिकता ओढ़े रहती है। मातृभाषा के प्रति तिरस्कार के इस भाव को बदलना होगा, इसे छोड़ना

[illegible] मातृभाषा के प्रति [illegible] कुछ अंश भी रखती ही है तो सभी भाषाएँ निःसन्देह अच्छी हैं।"

कितने ही अध्ययनों ने बच्चे के विकास में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया है। शिक्षा की पहले-पहल शुरुआत घर से ही होती है और मातृभाषा ही शिशु के लिए संसार की खिड़की खोलती है। कितने ही ऐसे साक्ष्य हैं जो साबित करते हैं कि घर में बोली जाने वाली पहली भाषा में सीखने से न केवल शैक्षणिक उपलब्धियां बेहतर होती हैं बल्कि किसी दूसरी भाषा का सीखना भी सरल हो जाता है।

शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में जरूरी है कि मातृभाषा में ही भाषा-ज्ञान की नींव रखी जाय, उसके बाद ही कोई अन्य भाषा सीखी जाय। भाषा की सीमा को हटा कर बच्चों की नैसर्गिक सृजनात्मकता को उन्मुक्त विकसित होने देना चाहिए।

भाषा किसी विशेष सांस्कृतिक परिवेश में विकसित होती है,वह पीढ़ी दर पीढ़ी उस संस्कृति की वैश्विक दृष्टि और संस्कारों के सतत प्रवाह को बनाए रखती है।

भाषा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों की पीढ़ियों की संचित ज्ञान निधि और आस्थाओं, विश्वासों, रीति-नीति के वाहक हैं। किसी भाषा के लुप्त होने से, उसके साथ यह समृद्ध विरासत भी खो जाती है। यह बहुत बड़ी हानि है जिसे हम बर्दाश्त नहीं कर सकते।

हम भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता, जो हमारी विविधता में एकता की द्योतक है, उस पर गर्व करते रहे हैं। यह समृद्ध सांस्कृतिक विविधता तभी बची रह सकती है जब हम अपनी मातृभाषाओं का संरक्षण करें।

निःसंदेह अन्य भाषाएं सीखना उपयोगी भी है और जरूरी भी। इससे हमारी वैश्विक दृष्टि में विस्तार होता है, अन्य संस्कृतियों के लिए समझ और सौहार्द बढ़ते है, शांति और सहिष्णुता बढ़ती है। लेकिन अपनी मातृभाषा की मजबूत नींव के बिना यह सब संभव नहीं। मातृभाषा जीवन मात्र की आत्मा है।

इस संदर्भ में आपसे आग्रह करूंगा कि आप संसद में जिस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं वहां की स्थानीय भाषा या बोली के संरक्षण, संवर्धन में अपना योगदान दें। जन-

[illegible]

[illegible] 21 [illegible] अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर मातृभाषा के महत्व, उनके संरक्षण और संवर्धन के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए आप संवाद आयोजित कर सकते हैं।

हाल ही में मैंने भी मातृभाषाओं को प्रोत्साहित करने के विषय में अपने विचारों को एक आलेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह आलेख देश भर के प्रतिष्ठित पत्रों में इस माह की 21 तारीख को प्रकाशित होगा। आप उसे पढ़ें और अपने शुभ विचारों से मुझे भी अवगत कराएं।

मुझे विश्वास है कि आप मुझसे सहमत होंगे कि आज भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है तथा उन्हें और भी समृद्ध बनाने के लिए यथासंभव प्रयास किए जाने चाहिए।

"हम अपनी मातृभाषा से प्रेम करें, उसे बढ़ावा दें"

शुभकामनाओं सहित,

आपका

(एम. वेंकैया नायडू)

डॉ हर्षवर्धन,

माननीय केन्द्रीय मंत्री,

15-288.